लंगड़ा बुखार से बचाव

- यह बिमारी संक्रमित भुमि जिसमें काफी मात्रा में''क्लोट्रीडियम चोभिआई'' के बीजाणु हों फैलती है।
- लंगड़ा बुखार से मरे जानवारों को जला देना चाहिए या जमीन क काफी अन्दर दबा देना चाहिए ताकि भूमि को संक्रमित होने से बचाया जा सके।
- संक्रमित भुमि पर जानवरों को चरने नहीं देना चाहिए। इस बिमारी से बचाव के लिए प्रभावी टीका उपलब्ध है। अत : बरसात के मौसम से पूर्व लंगड़ा बुखार का टीका अवश्य लगवाना चाहिए।
- बिमारी के लक्षणों के प्रतीत होने के शुरूआती दौर में ही उपयुक्त एंटीवायोटिक का इस्तेमाल कर लाभाकारी असर प्राप्त किया जा सकता है। अत: अविलम्ब पशु चिकित्सक से संपर्क करना चाहिए।

Sanjivni Art Computer. Ph : 9334116638

पशुओं में लंगड़ा बुखार

बिहार पशुविज्ञान विश्वविद्यालय
पटना कैंपस

परिचय

- लंगड़ा बुखार गाय में होने वाली एक महत्वपुर्ण जीवाणु जनित रोग है।
- वर्षा ऋतु में इस बिमारी के ज्यादातर मामले सामने आते हैं।
- इस रोग का बहुत तीव्र रूप भी देखने को मिलता है जिसमें मृत्युदर काफी ज्यादा होती है।
- लंगड़ा बुखार क्लोसट्रिडियम चोभियाई नामक जीवाणु द्वारा होता है जो विजाणु (ैचवतम) बनाने की क्षमता रखता है।
- ये बीजाणणु जमीन में सालो-साल जीवति रहते हैं और अनुकुल अवसर पाकर पशुओं को अपना निशाना बनाते हैं।
- यह बिमारी मुख्यत: गायों में देखने को मिलती है परन्तु बकरी, भेड़ आदि जानीवर भी इससे प्रभावित हो सकते है।
- समान्य तौर पर यह जीवाणु हाथ एवं पैर की मांसपेशियों को प्रभावित करता है।
- सभी उम्र और नस्ल के गाय इससे प्रभावित होते हैं पर 4 -24 महीने उम्र के जानवरों में यह संक्रमण ज्यादा देखने को मिलता है।
- मजबुत कद-काठी के पशु जिनकी मांसपेशियों ज्यादा विकसित हो, वैसे जानवरों के इस बिमारी से प्रभावित होनके की संभावना ज्यादा होती है
- त्वजा के कटने-फटने या घाव के रास्ते जब यह जीवाणु मांसपेशियों तक पहुँच जाता है तब ''लंगड़ा बुखार'' के लक्षण दिखाई देते है।

लंगड़ा बुखार के लक्षण
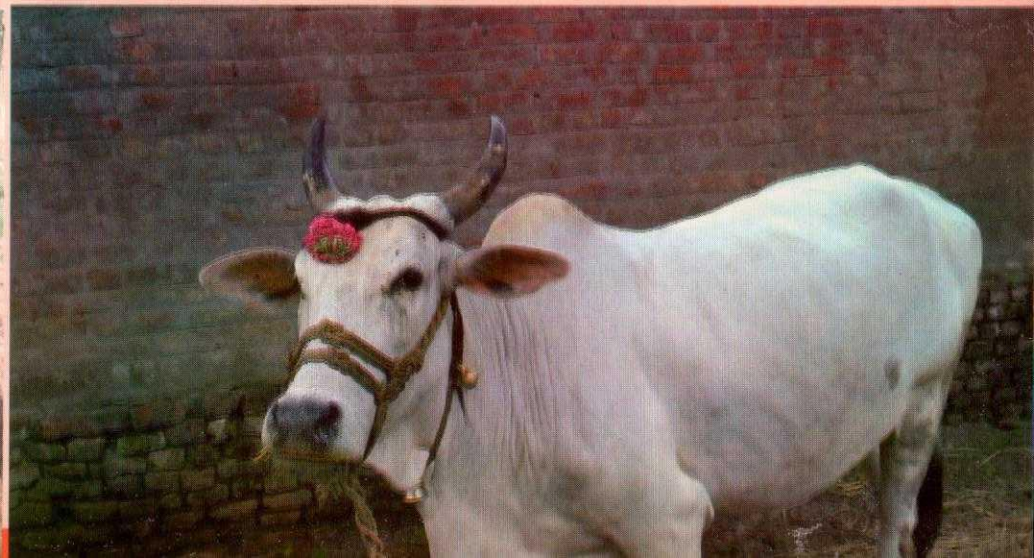
- इस बिमारी से प्रभावित पशुओं में प्रारंभ में कफी तीव्र बुखार (106^0&108^0) होता हैं।
- पैर में कड़ापन आने की वजह से पशु लंगड़ाने लगता है।
- मांसपेशियों में सुजन आने लगता है जो शुरूआत में गर्म मालुम पड़ता है और जिसको दबाने पर दर्द होता हैं।
- बाद में सुजन दर्दरहित और ठंढा हो जाता है।
- मांसपेशियों के बीच हवा जमा होने लगती है जो दबाने पर स्पंज जैसा मालुम पड़ता है और साथ में एक खास तरह की ''चटचटाहट'' की आवाज सुनाई देती है।
- तापमान में गिरावट आती है और बिमारी के लक्षण दिखने के 12-48 घंटे में पशु की मृत्यु हो जाती है।